निर्मला पुतुल के काव्य में स्त्री–विमर्श

डॉ. पुष्पा विश्नोई

सहायक आचार्य (हिन्दी)

राजकीय महाविद्यालय, बावड़ी (जोधपुर)

व्यष्टि के समष्टि रूप को समाज कहा जाता है। मनुष्य की समस्त बाह्य एवं आन्तरिक क्रियाएँ सामाजिक व्यवहार से निर्दिष्ट होती हैं। आदिवासियों का साहित्य सदियों से मौखिक साहित्य के रूप में उनके गीतों, कथाओं एवं गाथाओं के रूप में प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। लेकिन शिष्ट साहित्य या लिखित साहित्य को ही साहित्य की श्रेणी में माना जाए तो आदिवासी साहित्य का प्रारम्भ हुए अधिक समय नहीं हुआ है। हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श का प्रारम्भ 20वीं शदी के उतरार्द्ध में हुआ है। वैसे तो वर्तमान युग विमर्शों का युग है। विमर्श का सामान्य अर्थ चर्चा एवं बहस है, परन्तु वर्तमान में यह विश्व में पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रचलित है। जिसका तात्पर्य प्रचलित एवं सामाजिक दायरों में निर्मित विचारों से असहमति और स्वयं अपनी परिभाषा, विचार तथा अपनी समस्याओं के निराकरण करने की कोशिश है। आदिवासियों का साहित्य सदियों से मौखिक या लोक–साहित्य के रूप में उनके गीतों, कथाओं एवं गाथाओं के रूप में प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। लेकिन शिष्ट साहित्य या लिखित साहित्य को ही साहित्य की श्रेणी में माना जाए तो आदिवासी साहित्य का प्रारम्भ हुए अधिक समय नहीं हुआ है। हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श का प्रारम्भ 20वीं शदी के उतरार्द्ध में हुआ है। वैसे तो वर्तमान युग विमर्शों का युग है। विमर्श का सामान्य अर्थ चर्चा एवं बहस है, परन्तु वर्तमान में यह विश्व में पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रचलित है। जिसका तात्पर्य प्रचलित एवं सामाजिक दायरों में निर्मित विचारों से असहमति और स्वयं अपनी परिभाषा, विचार तथा अपनी समस्याओं के निराकरण करने की कोशिश है।

विमर्श की पूर्णता हेतु केन्द्रित व्यक्ति, वर्ग, समुदाय का स्वयं विचाराभिव्यक्ति में शामिल होना आवश्यक है। इसी कडी में युग–युग से वंचित स्त्रियों, दलितों तथा आदिवासियों ने भी अपनी पीड़ा को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति दी। स्त्री–विमर्श एवं दलित–विमर्श तो साहित्य की मुख्यधारा में सम्मिलित हो गये, परन्तु आदिवासी विमर्श अभी भी साहित्य की मुख्यधारा में स्थान बनाने को संघर्षरत है।वर्तमान में प्रबुद्ध साहित्यकार आदिवासी समाज की सामाजिक स्थिति, पीड़ा, वेदना एवं समस्याओं को कलम के माध्यम से प्रकट कर रहे हैं। इन साहित्यकारों में कई महिला रचनाकार महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है जैसे रमणिका गुप्ता, वंदना टेटे, मंजू ज्योत्स्ना, निर्मला पुतुल, ग्रेस कुजूर, उषा किरण आत्रम आदि। इन्होनें आदिवासियों के संघर्षों तथा समस्याओं के साथ ही आदिवासी महिलाओं की विवशता एवं वेदना को

अभिव्यक्त करते हुए उनमें जागरूकता एवं चेतना का स्वर फूंका है। नारीवादी विमर्श में आदिवासी स्त्री चेतना एक शाखा के रूप में उभर रही है। आदिवासी समाज की स्त्री की पीड़ा, वेदना, और आवेदन पर विचार करेंगे तो सवर्ण स्त्री की जो पीड़ा व दर्द है वह नारीवादी साहित्य में सभी भारतीय भाषाओं में अभिव्यक्ति पा रहे हैं। कुछ आदिवासी समुदायों में स्त्री की स्थिति सवर्ण स्त्री की तुलना में बदतर है। स्त्री विमर्श के नाम से साहित्य जगत में एक नई सोच सामने आयी भी है। स्त्रीवादियों का मानना है कि पुरुषाधिपत्य से लाखों स्त्रियाँ दबी हुई हैं। इनको केन्द्र में रखकर इनकी विमुक्ति के लिए जो कविताएँ लिखी जाती हैं, वे स्त्रीवादी कविताएँ हैं। समाज में पुरुष की भूमिका को श्रेष्ठ एवं महत्त्वपूर्ण और स्त्री की भूमिका को निम्न व महत्त्वहीन आंका जाने की अवधारणा को लेकर स्त्रीवादी साहित्य की विषयवस्तु का ताना बाना बुना हुआ है। सवर्ण नारियों की तुलना में दलित नारी की स्थिति अत्यन्त भिन्न एवं विलक्षण है तथा उनकी समस्याएँ भी अन्यों से भिन्न होती है। जब दलित नारियों की स्थिति को सवर्ण नारियों की स्थिति से भिन्न मान लेते हैं तो आदिवासी समाज की नारियों की स्थिति उनसे भी भिन्न एवं अधिक संधर्षरत दिखाई देती है। अब आदिवासी नारियों में भी जागृति आयी है। अतः उनकी पीड़ाओं एवं समस्याओं पर साहित्य में भी विचार विमर्श हो रहा है।

स्त्री चेतना की सशक्त कवयित्री निर्मला पुतुल मूलतः संथाली भाषा में लिखती है। इनके दो काव्य संग्रह **'नगाड़े की तरह बजते शब्द'** तथा **'अपने घर की तलाश में'** हिन्दी में प्रकाशित हो चुके हैं। इन काव्य संग्रहों में आदिवासियों की समस्याओं तथा स्त्रियों के जीवन–संघर्ष को अभिव्यक्ति दी है। निर्मला पुतुल ने आदिवासी स्त्रियों की दशा तथा उनके मनोभावों को अपनी कविता के माध्यम से उभारा है। उनकी कविताओं में आदिवासी सभ्यता एवं संस्कृति का सौरभ विद्यमान है। इन्होंने जीवन की किताब खुली आँख से पढ़ी है। उन्होंने खासकर अपने आसपास की स्त्रियों के सुख–दुःख को साझा किया है। उनकी कविता में स्वयं को तलाशती स्त्री पूछती है–

"यह कैसी विडम्बना है
कि हम सहज अभ्यस्त हैं
एक मानक पुरुष–दृष्टि से देखने
स्वयं की दुनिया
मैं स्वयं को स्वयं की दृष्टि से देखते
मुक्त होना चाहती हूं अपनी जाति से।" (**अपनी जमीन तलाशती बैचेन स्त्री**)

निर्मला पुतुल कहती है कि जब स्त्री स्वयं की दृष्टि से स्वयं को देखना सीख जाती है तो वह काफी हद तक बाहरी दिखावों व दबावों से मुक्त होना भी सीख जाती है। उनके अनुसार सशक्त स्त्री वह है जो स्वयं को पुनराविष्कृत करने के हौंसले से परिपूर्ण है। अन्याय का प्रतिकार एवं रूढियों को तोड़ने का साहस रखने वाली विचारशील स्त्रियाँ ही परिवर्तन करने में सक्षम होती है। वैचारिक परिवर्तन हेतु जागरूकता एवं ज्ञान आवश्यक है। वे अपनी बिटिया मुर्मू से यही आह्वान करती है–

"उठो कि अपने अँधेरे के खिलाफ उठो
उठो अपने पीछे चल रही साजिश के खिलाफ
उठो, कि तुम जहाँ हो वहाँ से उठो
जैसे तूफान से बवण्डर उठता है
उठती है जैसे राख में दबी चिनगारी" **(बिटिया मुर्मू के लिए)**

प्रायः यह मिथ्या धारणा पाल ली जाती है कि आदिवासी समाजों में स्त्री अधिक स्वतंत्र एवं अधिकार सम्पन्न है। निर्मला पुतुल इस मिथ को तोड़ती है। वे स्त्री की अस्मिता का प्रश्न बड़े तीखे स्वर में उठाती है–

"कोई गेंद
कि जब–तब
जैसे चाहा उछाल दी
या कोई चादर
कि जब–जहाँ जैसे–तैसे
ओढ़–बिछा लिया
चुप क्यों हो!
कहो न, क्या हूँ मैं तुम्हारे लिए??" **(क्या हूँ मैं तुम्हारे लिए?)**

वे पुरुष से पूछती है कि क्या वह स्त्री को देह से परे उसके मन को समझ सका, या कभी उसने स्त्री के मनोभावों को समझने का प्रयास किया है? औरत को वंशवृद्धि हेतु बच्चे पैदा करने वाला यंत्र मात्र ही समझता है–

"एक स्त्री को स्त्री दृष्टि से देखते
उसके स्त्रीत्व की परिभाषा?
अगर नहीं!
तो फिर जानते क्या हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से परे
एक स्त्री के बारे में.....?" **(क्या तुम जानते हो)**

समस्त कत्तर्व्य स्त्री के लिए तथा समस्त अधिकार पुरुष के पक्ष में है, ऐसे में अगर कोई स्त्री अधिकार की बात करे या शोषण के खिलाफ आवाज बुलन्द करे तो आदिवासी समाज उसे सर्वस्व से वंचित कर देता है। वे अपनी कविता में कहती हैं–

"हक की बात न करो मेरी बहन
मत माँगो पिता की सम्पत्ति पर अधिकार" (**कुछ मत कहो सजोनी किस्कू!**)

आगे वे इसी कविता में **'सजोनी किस्कू'** को संबोधित करते हुए कहती हैं कि पंचायत औरत के द्वारा आवाज बुलन्द करने पर **'जातीय टोटम'** के बहाने अत्याचार करवाती है एवं **'डायन'** तक करार दे दी जाती है–

"मिहिजाम के गोआकोला की
'सुबोधिनी मारण्डी' की तरह तुम भी
अपने मगजहीन पति द्वारा
भरी पंचायत में डायन करार कर दण्डित की जाओगी" (**कुछ मत कहो सजोनी किस्कू!**)

पुरुष समाज द्वारा आसानी से अपनी स्त्री त्याग देने की प्रवृत्ति पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए अपनी कविता के माध्यम से पूछती है–

"क्या है गलती मेरी
जो छोङना चाहते हो मुझे?
क्या इसी दिन के लिए इतने जतन से
घर गृहस्थी सँभाली तुम्हारी?" (**मेरा कसूर क्या है**)

आदिवासी समाज में कहावत है, "औरत पुरानी बाङ की तरह बदलने योग्य है।" इसी सोच की ओर इंगित करते हुए पुतुल लिखती हैं–

"अगर हाँ, तो यकीन नहीं होता
कि ये मनजहीन लोग तुम्हारे वंशज हैं
जो एक छोङ दूसरी, दूसरी छोङ तीसरी तक को उठा लाते हैं
और बिठा देते हैं घर
जरूरत बस, मन भर जाने भर की होती है!" **(पिलचू बूढी से)**

कवयित्री पुतुल आदिवासी स्त्री के प्रति तथाकथित सभ्य समाज के दृष्टिकोण एवं भोगवादी मानसिकता की परतें उघाड़ती है। यह समाज एक ओर तो आदिवासियों की भाषा, सम्प्रदाय, संस्कृति एवं वेशभूषा का मजाक उड़ाते हुए उन्हें असभ्य करार देता है, वहीं दूसरी ओर आदिवासियों की स्त्रियों की देह की तरफ लोलुप दृष्टि रखता है। स्त्रीशोषण, बालशोषण, यौनशोषण एवं सांस्कृतिक शोषण आदि न जाने कितने रूपों में सभ्य समाज आदिवासियों पर अत्याचार ढा रहा है। ऐसी मनोवृत्ति वाले सभ्य समाज पर व्यंग्य करते हुए वे कहती हैं–

"ये वे लोग हैं जो मुझे देख
नाक–भौं सिकोङते हैं
और गोरी चमङी से ढके चलते हैं।
अपना कालापन।।

ये वे लोग हैं जो दिन के उजाले में

मिलने से कतराते

और रात के अंधेरे में

मिलने का माँगते हैं आमंत्रण।।" (ये वे लोग हैं जो....)

सभ्य समाज के पुरुषों के द्वारा स्त्रियों की खरीद–फरोख्त एवं अपहरण आदि कुकृत्य वर्तमान में आम घटनाएँ हो गयी है। इनके विषय में **'बिटिया मुर्मू के लिए'** कविता के माध्यम से आगाह करती है–

"सौदागर हैं वे.....समझो.....

पहचानो उन्हें बिटिया मुर्मू.....पहचानो।

पहाड़ों पर आग वे ही लगाते हैं

उन्हीं की दुकानों पर तुम्हारे बच्चों का

बचपन चीत्कारता है।" **(बिटिया मुर्मू के लिए)**

कवयित्री **'बाहामुनी'** कविता के माध्यम से आदिवासी स्त्रियों के भोलापन तथा अशिक्षा के कारण उनके परिश्रम का व्यवसायी लोग उचित पारिश्रमिक नहीं देते हैं, तब उन्हें दुनियादारी के छलावों के विषय में कहती हैं–

"इस उबड़ – खाबड़ धरती पर रहते

कितनी सीधी हो बाहामुनी

कितनी भोली हो तुम

कि जहाँ तक जाती है तुम्हारी नजर

जबकि तुम नहीं जानती कि तुम्हारी दुनिया जैसी

कई–कई दुनियाएँ शामिल हैं इस दुनिया में।" **(बाहामुनी)**

यहाँ यह प्रश्न उपस्थित होता है कि निर्मला पुतुल अपनी कविता द्वारा क्या कहना चाहती हैं, उनकी कविता की स्त्री क्या चाहती है। उत्तर स्पष्ट है– उच्च वर्ग तथा पुरुष वर्चस्व की बातें पुरानी हो चुकी है, यथा–

"धरती के इस छोर से उस छोर तक

मुट्ठी भर सवाल लिए मैं

दौड़ती–हांफती–भागती.....

तलाश रही हूँ सदियों से निरन्तर.....

अपनी जमीन, अपना घर

अपने होने का अर्थ!!" (**तुम्हें आपत्ति है**)

इसीलिए कवयित्री निर्मला पुतुल की स्त्री अपने ऊपर थोपी गई देह मात्र से मुक्त होकर मनुष्य के रूप में स्थापित होना चाहती है–

"मैं कविता नहीं
शब्दों को रचती हूँ
अपनी काया से
बाहर खड़ी होकर अपना होना।" (**मेरे एकांत का प्रवेश द्वार**)

यह तभी संभव है जब वह शब्दों के द्वारा चेतना तथा जागृति लाकर, जुबान बंद कर सकेगी –

"जो जुबान रहते गूँगे बने
देख रहे हैं तमाशा
चाहती हूँ मैं
नगाड़े की तरह बजें मेरे शब्द
और निकल पड़ें लोग
अपने अपने घरों से सड़क पर।"(**मैं चाहती हूँ**)

आदिवासी औरतों के पक्ष में खड़ी हुई निर्मला पुतुल की कविता अपने परिवेशगत शब्दावली का चयन करती है तथा भाषा को गढ़ती है –

"मैं समझती हूँ भाषा की कपट
इसलिए तुम्हारी मायावी दुनिया से बाहर
सीधे–सीधे अपनी भाषा में
बात करना चाहती हूँ।" (**प्रश्न**)

निर्मला पुतुल की कविता मात्र शाब्दिक कलाकारी नहीं अपितु स्त्री जीवन का निर्मल दर्पण है, जो स्त्री की पीड़ा, वेदना, तड़फ, मानसिक संताप का स्पष्ट प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता है। साथ ही उनकी कविता स्त्री को अन्याय एवं शोषण के प्रतिकार के लिए प्रेरित करती है। उनकी कविताएँ आदिवासी स्त्री को अपनी अस्मिता एवं आत्म – सम्मान की पहचान कराती है।

सन्दर्भ पुस्तकें:–

1.नगाड़े की तरह बजते शब्द (काव्य संग्रह) निर्मला पुतुल,
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

2.अपने घर की तलाश में (काव्य संग्रह) निर्मला पुतुल, रमणिका फाउण्डेशन

3.दलित जीवन का अधिकार और निर्मला पुत्तुल की कविता –
मिनीप्रिया आर., जवाहर पुस्तकालय मथुरा

4.कहती हैं औरतें –सं. अनामिका, इतिहास बोध प्रकाशन इलाहाबाद

5.युद्धरत आम आदमी पत्रिका

6.कथादेश पत्रिका

7.हंस पत्रिका

8.आदिवासी जगत पत्रिका

9.ब्लॉग पत्रिका 'सेतु साहित्य'